भारतीय देशज शिक्षा : कुछ सवाल

❑ रोहित धनकर

सतरहवीं अठारवीं शताब्दी में भारतीय शिक्षा के एक सुन्दर पेड़ की बात काफी की जाती है । अब यह लगभग सर्वविदित है कि श्री धर्मपाल ने अंग्रेजों द्वारा एकत्रित कुछ आंकडों और रिपोर्टों का विश्लेषण कर ''द ब्यूटीफुल ट्री'' नाम की पुस्तक लिखी है, कि यह विशेषण सबसे पहले गांधीजी ने काम में लिया था। इस पुस्तक एवं श्री धर्मपाल के शोध के आधार पर अनेकों आलेख लिखे जा रहे हैं । इन आलेखों के आधार पर जो तस्वीर पाठक के मन में बनती है उसमें भारतीय समाज में सतरहवीं-अठारहवीं शताब्दी में शिक्षा की छवि बहुत उजली नजर आती है । लगता है :

- पढ़ने वाले बच्चों की संख्या काफी अच्छी थी ।
- समाज में सभी वर्गों के बच्चे एक साथ एक जैसी शिक्षा प्राप्त करते थे ।
- शिक्षकों में तथाकथित अछूत (शूद्र) वर्ग के शिक्षक भी थे, ब्राह्मणेतर तो थे ही ।
- लड़कियां भी पढ़ती थी - विद्यालय में या घर पर ।
- प्रत्येक गांव में स्कूल था ।
- शिक्षा प्रासंगिक थी । इसमें 'अखिल भारतीय' एवं स्थानीय रूपों का अच्छा सामंजस्य था ।

इस तस्वीर पर प्रत्येक भारतीय को गर्व होना स्वाभाविक सा ही है । पर इस आरंभिक गर्व के बाद ? आगे क्या करें? एक - इस गर्व-कारी 'तथ्य-संकलन' का प्रचार करें। बार-बार उलट-पुलट कर इसे लिखते रहें, बोलते रहें । शिक्षा के प्रत्येक मसले को इसी कसौटी (?) पर कसते रहें । इसे इतिहास की पुस्तक में लिख दें। पर शिक्षा, स्कूल एवं पढ़ाने का तरीका वही रहे जो आज है । यह काफी आसान काम है । इस सुन्दर पेड़ की काल्पनिक छाया में बैठने का स्वप्न देखने वाले अधिकतर लोग यही कर रहे हैं ।

दूसरी बात यह हो सकती है कि इस सारी बात को जरा गंभीरता से लें । इसे वह सम्मान दें जो किसी भी ज्ञान को दिया जाना चाहिये । अर्थात हमारे शैक्षिक-कर्म के संदर्भ में इसे देखें । क्या यह जानकारी आज की परिस्थिति को समझने में हमारी मदद कर सकती है ? क्या इससे हमारी शिक्षा संबंधी योजना एवं इसके क्रियान्वयन को दिशा मिल सकती है ? जब इस प्रकार से विचार करते हैं तो कुछ प्रश्न उठते हैं । क्योंकि हमें इस पूरी बात पर गहराई से और व्यवस्थित विचार करने की जरूरत आन पड़ती है । कर्म का आधार बनाने से पहले ज्ञान की परख जरूरी होती है। इस संदर्भ में मेरे मन में कई सवाल उठते हैं। उदाहरणार्थ-

जब कहा जाता है कि विद्यालयों में जाने वाले बच्चों में द्विजों का प्रतिशत शूद्रों से कम था तो इस बात के निहितार्थों को ठीक से समझने के लिए यह भी जानना जरूरी है कि-

1. जनसंख्या में द्विज-शूद्र अनुपात क्या था ? द्विज और शूद्र की 'परिभाषा' क्या की गई है ?
2. शिक्षा की अन्य व्यवस्थायें क्या थी ? इन स्कूलों के अलावा ?
3. क्या विशेष रूप से ब्राह्मणों या द्विजों या प्रभुता संपन्न तबकों के लिए विशिष्ठ शिक्षा संस्थान भी थे ?
4. उच्च शिक्षा में यह अनुपात क्या था ?

जिस तरह की पुस्तकों का जिक्र किया जाता है पढ़ाने के लिए उनके बारे में भी इसी तरह के सवाल उठते हैं :

1. क्या ये सभी पुस्तकें सभी स्कूलों में पढ़ाई जाती थीं ? या फिर ये कुल पुस्तकों की सूची है और इनका कोई खास बंटवारा था ?
2. क्या प्रत्येक शिक्षक इन पुस्तकों को पढ़ाने में समर्थ था ?

हो सकता है इन प्रश्नों के उत्तर श्री धर्मपाल की पुस्तक में मिल जाते हों । (मैंने वह पुस्तक पढ़ी नहीं है ।)

पर सवाल व्यापक है । इस पुस्तक में प्राप्त जानकारी को ठीक से समझने के लिए इन प्रश्नों का उत्तर भी चाहिये। अधिकतर आलेख इन पर मौन रहते हैं।

पर ये प्रश्न तो स्वयं कुछ और गहरी परेशानी पैदा करने वाले प्रश्नों के दायरों को समझने के प्रयास में बनते हैं । अच्छी, उपयुक्त शिक्षा के इतने व्यापक प्रसार वाले समाज को लेकर कुछ दूसरी प्रकार के गैर तथ्यात्मक सवाल भी उठते हैं।

एक, यह जानकारी हमें अंग्रेजों के सर्वेक्षणों से ही क्यों मिलती है ? हमारे इस सुशिक्षित समाज में क्या कोई सूचना एकत्रित करने के तरीके थे ? क्या वह समाज अपने-आप के बारे में जानकारियां एकत्रित करता था? समाज अपने बारे में जानकारियां तब एकत्रित करते हैं जब उनमें 'आत्म चेतन' के कारण आत्म विश्लेषण की जरूरत अनुभव होती है । क्या उस शिक्षा ने भारतीय समाज में आत्म विश्लेषण की मशाल जलाई ? यदि हां, तो उसके देशज चिन्ह कहां हैं ?

दो, इतने व्यापक स्तर पर हुई इस शिक्षा ने जाति व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह क्यों नहीं लगाया ? क्या जाति व्यवस्था भी उतनी उत्पीड़क नहीं थी जितनी आज हम इसे मानते हैं ? या फिर उत्पीड़ित में वह चेतना नहीं थी जो उत्पीड़न को उसके सही परिप्रेक्ष्य में देख सके ? क्या यह शिक्षा उत्पीड़न को नियति के रूप में, एक शुभ व्यवस्था के रूप में, देखने में मदद करती थी ? या उत्पीड़न के विरुद्ध थी ? या उत्पीड़न उस के लिए सार्थक सवाल ही नहीं था?

तीन, इतने सारे स्कूल शिक्षकों के घरों में, मस्जिदों में, मंदिरों में चल रहे थे । इनके लिए स्थान की क्या व्यवस्था थी? कहीं भी बैठ कर मात्र पढ़ा लेने तक सीमित थी या कोई नियत स्थान स्कूल का था ? या फिर यह सवाल ही पश्चिमी दृष्टि वाला है ? विद्यालय के लिए पृथक नियत भवन की आवश्यकता होती ही न हो कहीं?

चार, इतने व्यापक स्तर पर चलने वाला गंभीर मानवीय कर्म ज्ञान का सृजन करता है । कर्म से संलग्न समुदाय में विमर्श भी होता है। तो इतने व्यापक स्तर पर शिक्षाकर्म को भी किसी एक शिक्षण शास्त्र एवं शिक्षण शास्त्रीय विमर्श को जन्म देना चाहिये था । क्या किसी देशज साहित्य में इस प्रकार के विमर्श के संकेत हैं ? किसी विमर्श और संहिता-बद्ध ज्ञान के अभाव का अर्थ होगा कि यह पढ़ाना शिक्षक के स्तर पर एक गैर (या कम) महत्वपूर्ण व्यक्तिगत गतिविधि भर थी। सामाजिक संदर्भों में कोई सचेत कर्म नहीं।

पांच, शिक्षा की इतनी व्यापक एवं सुचारू व्यवस्था होने के बावजूद जीवन के तरीकों में, व्यवस्थाओं में, तकनीक के विकास में एक प्रकार की जड़ता क्यों थी ? विज्ञान, और मानविकी के ज्ञान में विवेच्य काल का भारतीय योगदान क्या है ? तकनीकि के विकास में भारतीय योगदान क्या है ? उस काल में पूरी दुनिया में जहां चिंतन के स्तर पर एवं प्रकृति को समझने के स्तर पर नये विचार पनप रहे थे, भारतीय समाज ने इस दिशा में क्या योगदान दिया ? इस शिक्षा ने भारतीय विज्ञान को, भारतीय चिकित्सा को कितना आगे बढ़ाया?

छः, व्यापक स्तर पर शिक्षा समाज में संप्रेषण की संभावना बनाती है । साझे विमर्श की संभावना बनाती है। आत्म चेतना की संभावना बनाती है । ऐसे समाज को जब कोई विदेशी सत्ता अपने आधीन करने का प्रयत्न करे तो उसका एक स्वभाविक विरोध होना चाहिए । यदि समाज आत्म-चेतना एवं ज्ञान के क्षेत्र में समर्थ है तो इस चुनौती का डट कर मुकाबला करना चाहिए । कई बार आश्चर्य होता है कि भारतीय समाज विदेशी आक्रमण के सामने भर-भरा कर ढह भर गया। कोई कारगर प्रतिरोध खड़ा नही कर पाया। क्या यह बात उस शिक्षा की तासीर पर कोई प्रश्न चिह्न लगाती है ?

ये सवाल सोचने पर मजबूर करते हैं कि उस शिक्षा की तासीर क्या थी ? कहीं वह एक ढांचे विशेष में समाजीकरण का उपक्रम तो नहीं थी ? जो यथा स्थिति को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहती हो ? जो विचार विश्लेषण की काबिलियत को बढ़ाने के बजाय 'सुविचारित मतारोपण' का साधन हो ?

मेरा मानना है कि हमें विवेच्य काल की शिक्षा व्यवस्था को ठीक से समझने के लिए उस वक्त के और आंकड़े चाहियें। उन विद्यालयों के शिक्षण-शास्त्र और शिक्षाक्रम के बारे में और जानकारी चाहिये । ◆